समाजवाद और वामपंथ

~~कम्युनिस्ट पार्टी~~:

→सर्वप्रथम क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी अपने विदेश प्रवास के दौरान समाजवादी विचारों की ओर आकर्षित।

→1920 में एम० एन० राय द्वारा कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की बैठक में हिस्सा लेने के बाद ताशकंद में 'भारतीय साम्यवादी दल' की स्थापना

→1921-22 में खिलाफत से जुड़े हुए अनेक मुहाजिरों का अफगानिस्तान के रास्ते सोवियत रूस की ओर पलायन तथा वहाँ से साम्यवादी विचारों से प्रभावित होकर वापस लौटना। अतः 1922-23 में पेशावर षड्यंत्र केस।

→भारत में कानपुर में सत्यभक्त, पंजाब में गुलाम मुहम्मद, बंगाल में मुजफ्फर अहमद, बम्बई में श्रीपाद अमृत डाँगे तथा मद्रास में सिंगारवेलु चेट्टियार जैसे कम्युनिस्ट नेता सक्रिय। 1925 में एम० सिंगारवेलु की अध्यक्षता में कम्युनिस्ट पार्टी की अखिल भारतीय बैठक।

→आरंभ में कम्युनिस्ट पार्टी का कांग्रेस के साथ मिलकर काम करना। फिर श्रमिक तथा किसान पार्टी तथा गिरनी कामगार यूनियन (1929 बम्बई में बना) जैसे सहयोगी संगठनों की सहायता से श्रमिकों और किसानों को संगठित करने का प्रयास

→~~युवकों की प्रवृत्ति~~→

→1920 के दशक में भारतीय युवक वामपंथी विचारों की ओर आकर्षित। इसका एक कारण गांधीवाद से मोहभंग तथा वैकल्पिक रणनीति की तलाश दूसरा 'रूस की साम्यवादी क्रान्ति ने स्वतन्त्रता विषयक अवधारणा को बदल दिया। अब राजनीतिक स्वतन्त्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वतन्त्रता को भी महत्वपूर्ण माना जाने लगा। फिर 1929-30 की वैश्विक आर्थिक मंदी ने पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की कमजोरी तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था की ताकत को स्पष्ट कर दिया।

→स्वाभाविक रूप से इसके परिणामस्वरूप नए युवकों में समाजवादी विचारों का प्रभाव महसूस किया गया। इन युवकों में जवाहर लाल नेहरू तथा सुभाष चन्द्र बोस के नाम लिये जा सकते हैं। जवाहर लाल नेहरू ने 1927 में ब्रुसेल्स में दलित राष्ट्रों के समूह की अध्यक्षता की। फिर उन्होंने अपने समाजवाद के स्वरूप को साम्राज्यवाद विरोध से जोड़ दिया। 1929 के लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने यह घोषित किया कि "मैं समाजवादी एवं प्रजातान्त्रिक हूँ।"

Scanned with CamScanner

→ कांग्रेस के कुछ अन्य युवा नेता गांधी के आदर्शवादी और रूढ़िवादी विचारों से असन्तुष्ट थे। उन्होंने कांग्रेस के मंच पर ही एक समाजवादी दल को संगठित करने का प्रयास किया। इन नेताओं में जय प्रकाश नारायण, यूसुफ प्रसाद वर्मा, आचार्य नरेन्द्र देव, मीनू मसानी सम्पूर्णानन्द, अशोक मेहता आदि प्रमुख थे। इन नेताओं के द्वारा पहले प्रांतीय स्तर पर समाजवादी दलों का गठन किया गया। फिर 1934 में बम्बे में कांग्रेस समाजवादी दल की प्रथम अखिल भारतीय बैठक हुई। यहीं से औपचारिक रूप से कांग्रेस समाजवादी दल अस्तित्व में आया। इस दल द्वारा स्वतन्त्रता को पुनर्परिभाषित किया गया तथा इसे राजनीतिक स्वतन्त्रता से आर्थिक स्वतन्त्रता का अर्थ दिया गया। इस दल का उद्देश्य श्रमिकों तथा किसानों को संगठित कर वर्ग संघर्ष के आधार पर जनान्दोलन को प्रोत्साहन देना था। किन्तु इसने कांग्रेस की छतरी के अन्तर्गत कार्य करना ही उचित समझा क्योंकि कांग्रेस राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करने वाली प्रतिनिधि संस्था थी। परन्तु इसका उद्देश्य संगठन तथा विचारधारा के स्तर पर कांग्रेस को समाजवाद की दिशा में मोड़ना था। कांग्रेस समाजवादी दल ने अपने लक्ष्य में पहला स्थान राष्ट्रीय स्वतन्त्रता को तथा दूसरा स्थान समाजवादी रूपान्तरण को दिया।

→ हालाँकि कुछ मूलभूत कमजोरियों के कारण यथा- स्पष्ट कार्यक्रम के अभाव तथा संयुक्त मोर्चा बनाने में विफलता के कारण वामपंथी दल राष्ट्रीय आन्दोलन पर अपना वर्चस्व स्थापित नहीं कर सके, लेकिन वामपंथी नीति के प्रभाव में कांग्रेस के दृष्टिकोण एवं कार्यक्रम में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गये।—

① 1931 का कराची अधिवेशन - आर्थिक कार्यक्रम
② 1936 का लखनऊ अधिवेशन - कृषक कार्यक्रम
③ 1937 का फैजपुर अधिवेशन - कृषक कार्यक्रम
④ 1937 में कांग्रेस का चुनावी घोषणा पत्र
⑤ 1938 के हरिपुरा अधिवेशन में योजना समिति का गठन
⑥ स्वतन्त्रता के पश्चात भी समाजवादी नीति के प्रति भारत की प्रतिबद्धता।

Scanned with CamScanner

कम्युनिस्ट पार्टी की विफलता के कारण :

(1) जो मार्क्सवादी साहित्य था वह रुसियाई परिस्थितियों के अनुकूल विपरीत था। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में अपेक्षित लचीले का अभाव था, इस इससे नवीन परिस्थितियों के अनुसार इसमें संशोधन नहीं लाया।

→ कम्युनिस्ट पार्टी की प्रतिबद्धता भी विभाजित थी। यह रुसी कम्युनि पार्टी और ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी से निर्देशित हो रही थी। दूसरी यह भारतीय राष्ट्रवाद में अपनी पहचान स्थापित करने में चूक ग भारत छोड़ो आन्दोलन और भारत विभाजन के मुद्दे पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का दृष्टिकोण इस बात को सिद्ध कर देता है।

→ सशक्त नेतृत्व का अभाव। चीन के माओत्से तुंग एवं वियतनाम हो-ची-मिन्ह जैसे नेता का अनुपस्थिति।

→ दल के अन्दर गुटबन्दी की समस्या।

→ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को गांधी के नेतृत्व में अधिक सशक्त बुर्जुआ वर्ग का सामना करना पड़ा।

Scanned with CamScanner

कांग्रेस समाजवादी दल के उद्भव के कारण :-

(1) 1917 के रूसी क्रान्ति ने और फिर लेनिन के उद्भव ने उपनिवेश की जनता को साम्राज्यवाद विरोध की एक वैकल्पिक रणनीति प्रदान की। इसने युवाओं को अत्यधिक प्रभावित किया।

(2) गांधीवादी नेतृत्व युवाओं को बहुत अधिक संतुष्ट नहीं कर सका था। फिर असहयोग आन्दोलन के मध्य गांधी जी द्वारा अचानक आंदोलन को वापस लिये जाने की घटना ने युवाओं में निराशा का संचार किया। फिर 1930 के दशक में गांधी की रहस्यवादी विचारधारा तथा सामाजिक मुद्दे पर अस्पष्ट नीति ने युवा वर्ग को एक वैकल्पिक दृष्टिकोण अपनाने के लिये प्रोत्साहित किया और वह दृष्टिकोण था — समाजवाद

(3) जवाहर लाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस जैसे नेताओं ने 1920 के दशक के अन्त में युवाओं को संगठित करना आरंभ कर दिया था। फिर 1929-30 की वैश्विक आर्थिक मंदी ने समाजवादी मॉडल के महत्व को उद्घाटित कर दिया था। अतः 1933 में नासिक जेल में समाजवादी रुझान से प्रेरित युवानेताओं की बैठक हुई - - -

2nd Part → जैसा कि हम देखते हैं कि कांग्रेस समाजवादी दल की का प्रथम रुझान राष्ट्रवादी था तथा दूसरा समाजवादी। उनका ये मानना था कि यदि दोनों पहलुओं में टकराहट हो तो उनकी प्रतिबद्धता राष्ट्रवाद के प्रति होगी। यही कारण है कि यद्यपि इनका लक्ष्य था संगठन एवं विचारधारा के स्तर पर कांग्रेस को समाजवाद की तरफ मोड़ना किन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं हो सका। फिर कांग्रेस समाजवादी दल अन्य साम्यवादी एवं समाजवादी गुटों के साथ मिलकर काम नहीं कर सके। 1939 के त्रिपुरी संकट के समय भी इनकी भूमिका संदिग्ध रही। इस संकट की घड़ी में इन्होंने सुभाष का साथ छोड़ दिया। इस प्रकार न तो ये भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और न ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पर अपना वर्चस्व स्थापित कर सके।

→ फिर भी कांग्रेस समाजवादी दल को प्रभावहीन नहीं माना जा सकता। इसकी कई उपलब्धियाँ स्मरणीय हैं —

(1) इसने कांग्रेस के लक्ष्य एवं कार्यक्रम को प्रभावित किया तथा स्वतन्त्रता की अवधारणा को विस्तारित किया।

(2) 1931 के कराची अधिवेशन पर भी इसका प्रभाव रहा

(3) 1936 के लखनऊ और 1937 के फैजपुर अधिवेशन पर प्रभाव

(4) ~~सम्पूर्णकांग्रेस~~ कांग्रेस समाजवादी दल के कार्यकर्ताओं द्वारा विविध प्रांतों में किसान सभाओं का गठन तथा किसान आन्दोलन का आयोजन

(5) 1937 के चुनावी घोषणापत्र पर प्रभाव

Scanned with CamScanner

भारत के विभाजन पर - - -

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी - भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने, जो 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन से ही भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य धारा से दूर रही थी, भारत के विभाजन पर एक बहुत ही संकीर्ण विचार प्रस्तुत किया। 1942 में कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा भारत की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में 16 स्वतन्त्र राष्ट्रों की योजना प्रस्तुत की गई और फिर 1946 में इसकी संख्या बढ़ाकर 17 कर दी गई। यहाँ CPI का कार्यक्रम दो कारकों से प्रेरित था - प्रथम, सोवियत रूस के मॉडल पर भारत को विभिन्न नस्लसमूहों के समुदाय के रूप में प्रस्तुत करना। जबकि भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता के बावजूद भी नस्ल के आधार पर विभाजित नहीं था। साथ ही मुस्लिम लीग को छोड़कर दूसरा कोई भी दल अथवा समूह विभाजन के संदर्भ में नहीं सोच रहा था। इसलिए CPI की इस योजना ने भारतीय दलों एवं समूहों को आकर्षित नहीं किया।

दूसरा, CPI अपनी योजना से मुस्लिम लीग को प्रभावित करना चाहती थी। किन्तु लीग ने भी उसकी योजना को गंभीरता से नहीं लिया।

→ कांग्रेस समाजवादी दल :- जब कांग्रेस ने विभाजन को स्वीकृति दी तो कांग्रेस समाजवादी दल के नेता अत्यधिक निराश हुए। उन्होंने कांग्रेस के इस कदम को सम्प्रदायवाद के समक्ष आत्मसमर्पण माना। उन्होंने इस राष्ट्रीय संकट के लिये न केवल कांग्रेस को दोषी करार दिया वरन् स्वयं (CSP) को भी जिम्मेदार माना। 3 जून 1947 को कांग्रेस समाजवादी दल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने उपर्युक्त मत की घोषणा की।

→ फारवर्ड ब्लाक :- सुभाष चन्द्र के पश्चात् कुछ अन्य नेताओं ने फारवर्ड ब्लाक को पुनर्गठित किया। 10 जून 1946 को बाम्बे बैठक में यह प्रस्ताव स्वीकार किया कि फारवर्ड ब्लाक, क्रांति के लक्ष्य को आगे बढ़ायेगी। जब विभाजन का प्रस्ताव आया तो मार्च 1947 की कलकत्ता बैठक में कांग्रेस के इस कदम की आलोचना की गई। सत्ता परिवर्तन को नाटक अथवा स्वाँग माना गया जो बुर्जुआ वर्ग और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के बीच एक समझौते का परिणाम था।

→ द रेवोल्युशनरी सोशलिस्ट पार्टी :→ इसका आयोजन सर्वप्रथम 1905 में क्रान्तिकारी राष्ट्रवादियों द्वारा किया गया था। अक्टूबर 1924 में एक बार यह पुनर्जीवित हुई। आगे इसकी पहचान "हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी" के रूप में स्थापित हुई। भारत छोड़ो आन्दोलन में इस पार्टी ने अहम भूमिका निभाई। जब भारत के विभाजन का प्रस्ताव आया तो RSP ने कांग्रेस के इस कदम को दलाली की संज्ञा दी तथा इसे बुर्जुआ वर्ग की धोखाधड़ी करार दिया। हालांकि इस दल ने यह स्वीकार किया कि यद्यपि विभाजन अवश्यंभावी हो गया है, फिर भी इसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध किये जाने वाले अनवरत संघर्ष को आगे बढ़ाने का काम किया।

Scanned with CamScanner

द रेवोल्यूशनरी कम्युनिस्ट पार्टी:- इसके संस्थापक सौम्येन्द्रनाथ टैगोर थे। इन्होंने कामिन्टर्न से अपना रिश्ता तोड़कर 1942 में एक नये दल का गठन किया। RSP की ही तरह इस पार्टी का भी मानना था कि भारत का विभाजन ब्रिटिश साम्राज्यवाद और भारतीय बुर्जुआ वर्ग के संयुक्त उद्यम से किया गया एक राजनीतिक षड्यंत्र है। इसके अनुसार विभाजन ब्रिटिश साम्राज्यवाद के समक्ष कांग्रेस नेताओं के पूर्ण समर्पण को दर्शाता है।

द बोल्शेविक पार्टी आफ इण्डिया:- कुछ कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं ने कम्युनिस्ट पार्टी आफ इण्डिया को छोड़ 1939 में एक पृथक दल बनाया। अन्य वामपंथी दलों की ही तरह इस दल ने भी भारत के विभाजन को भारतीय बुर्जुआ वर्ग के विश्वासघात का परिणाम माना।

द रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी:- कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल से बाहर निकलने के पश्चात 1930 में एम० एन० राय भारत आये तथा अपने कुछ सहयोगियों के साथ मिलकर 1940 में उन्होंने इस पार्टी की स्थापना की। भारत में सत्ता के हस्तान्तरण पर राय का विचार अन्य वामपंथी दलों से अलग था। यद्यपि उन्होंने भारत के विभाजन तथा विश्वास दल को सत्ता के हस्तान्तरण को पसंद नहीं किया, परन्तु उन्होंने माउण्टबेटन योजना को एक कड़वी वास्तविकता के रूप में स्वीकार कर लिया।